प्रस्तावना

पूज्येश्वरी प्रवर्तिनी श्री प्रताप श्रीजी की शिष्या पूज्य साध्वीजी महाराज रिद्धिश्रीजी गत स० २०१७ पोष कृष्ण १ को कलकत्ते पधारी थीं—उनके साथ उनकी आज्ञाकारिणी साध्वियाँ श्री चन्द्रश्रीजी, साध्वीश्री धरणेन्द्रश्रीजी एव श्री दिव्यश्रीजी थी। वे यहाँ काफी अस्वस्थ रहने लगीं। निरन्तर रूगणवस्था में रहने पर भी वे शान्त स्वभावी एव महान सरल थीं। आखिर तक वेदना अत्यन्त बढ़ने पर भी उनका यह शान्त स्वभाव बना ही रहा एव आने-जानेवालों को बराबर धर्मोपदेश देती ही थीं। स० २०१९ को चैत्र कृष्ण १ सोमवार को प्रात काल उनका निर्वाण हो गया। उनके देहावसान से समाज को काफी क्षति हुई है। उनकी रूगणवस्था में उनकी शिष्याओंने एव उनमें विशेषकर साध्वीजी श्री चन्द्रश्रीजी महाराजने काफी सेवा की है। यहाँ रहनेवाले देखते थे कि उनकी सेवा में उन्होंने रात में पूरी नींद नहीं ली एव दिन में पूरा आहार नहीं किया।

उनके निर्वाण पर अग्नि सस्कार का कार्य यहाँ पर यथा विधि अच्छी तरह से सम्पन्न हुआ। संघ के अनेक भाई-बहिन तथा अनेक प्रमुख व्यक्ति उनकी शवयात्रा में साथ थे। उनके लिये पाल्खी तैयार करवाई गई—रग बिरगी झडियों

से तथा रौप्य कलशों से उसे सजाया गया। सैकड़ों रुपयों की उछाल करते हुये उनकी शव यात्रा आगे चली।

उस वक्त समाज की ओर से खर्च के लिये चिट्ठा किया गया था। उसमें अनेक बन्धुओं ने अपनी अपनी इच्छानुसार सहयोग दिया। उसमें से यहाँ के तूलापट्टी स्थित श्री बड़े मंदिरजी में अठाई महोत्सव किया गया एवं एक दिन श्री दादाजी महाराज की पूजा भी भणाई गइ। अठाई महोत्सव में एक दिन बीकानेर निवासी सेठ चंपालालजी सुन्दरलालजी गोलछा की ओर से केशरिया मोदकों की प्रभावना भी की गइ।

उस चिट्ठे में से जो रकम बची हुई थी—उसको खर्च करने के लिये अनेक बन्धुओं ने कहा कि रात दिन काम में आने लायक एक स्नात्र पूजाकी पुस्तक की जरूरत है अत एव यह पुस्तक तैयार करके प्रकाशित की गई है। इसमें संशोधन आदि का कार्य पूज्य साध्वीजी महाराजश्री चन्द्रश्रीजी ने किया है—फिर भी कोई त्रुटि हो तो विद्वद्जन उसे सुधार लें।

चूंकि इस कार्य के आय व्यय का हिसाब हमारे ही जिम्मे रहा था अतएव हमें यह सब करने का मौका मिला—एव इसके हिसाब किताब का पूरा विवरण वाऊचरों सहित फाईल बना कर श्रीमन्दिरजी में ही रख दी है—जिन महा-[illegible] की इच्छा हो वे इसका निरीक्षण कर सकते हैं।

अन्तमें निवेदन है कि महाराजश्री की शोक सभा में एक विचार आया था कि उनकी स्मृति में कलकत्ते में एक धर्मशाला बनवानी चाहिये। निश्चय ही धर्मशाला की यहाँ नितान्त आवश्यकता है तथा उसमें साधु साध्वियों के भी ठहरनेकी व्यवस्था रहनी चाहिये ताकि धर्मध्यान आदि का लाभ भी उठा सकें। इसके लिये पूज्य साध्वीजी महाराजश्री चन्द्रश्रीजी काफी प्रेरणा दे रही हैं—आशा करते हैं—गुरुदेव महाराज की महती कृपा से यह कार्य सफल होगा।

—दीपचन्द नाहटा

जिन मंदिर दर्शन विधि

जिन मंदिर में दर्शनार्थ जाने के समय खान पान की सभी वस्तुएँ त्याग करके, मुख में पान वगैरह हो तो कुल्ला करके एव हाथ धोकर मंदिर में प्रवेश करते वक्त तीन बार "निसीहि, निसीहि, निसीहि" कहना चाहिये। मन्दिर में चढ़ाने के लिए मेवा, मिष्टान्न इत्यादि ले जाना हो तो उसकी कोई मनाई नहीं है। मंदिर में ले जाई हुई खाने पीने की कोई भी सामग्री अपने खाने पीने के काम नहीं आती है। कुछ लोग पान खाते हुए या मुँह में सुपारी इलायची खाते ही मंदिर में जाते हैं—यह अपने नियम विरुद्ध है।

मंदिरजी में प्रवेश करने पर-प्रभू मुद्रा को देखते ही दोनों हाथ जोड़कर मस्तक नवाकर, हर्ष के साथ, उल्लास के साथ-प्रभू गुण गान की कोई एक स्तुति बोलनी चाहिये। फिर तीन बार प्रदक्षिणा देते समय-इस प्रकार बोलना चाहिए-

पहिली प्रदक्षिणा के समय

हे प्रभो-ज्ञान गुणस्य प्राप्त्यर्थं प्रथम प्रदक्षिणाम् ददामि।

दूसरी प्रदक्षिणा के समय

हे प्रभो–दर्शन गुणस्य प्राप्त्यर्थं द्वितीय प्रदक्षिणाम् ददामि।

तीसरी प्रदक्षिणा के समय

हे प्रभो–चारित्र गुणस्य प्राप्त्यर्थं तृतीय प्रदक्षिणाम् ददामि।

इसके पश्चात् चावल का साथिया करे एव ऐसा बोले

हे प्रभो! चतुर्गति निर्मोहार्थं स्वस्तिक रचयामि।

हे प्रभो! चारों गतियों को नाश करने के लिये मैं यह साथिया कर रहा हूँ। इसके बाद चावलों की तीन ढिगली करे एव ऐसा बोले।

हे प्रभो! ज्ञान दर्शन चारित्र प्राप्त्यर्थं त्रिपुञ्ज रचयामि।

(हे प्रभो! ज्ञान दर्शन और चारित्र की प्राप्ति के लिए मैं तीन ढिगलियाँ कर रहा हूँ) उन तीन ढिगलियों के ऊपर एक अर्द्ध चन्द्राकार करे एव यह बोले—

हे करुणासिन्धो! सिद्ध स्थान प्राप्त्यर्थं चन्द्राकार करोमि।

(हे करुणासिन्धो! सिद्ध स्थान की प्राप्ति के लिये–मैं अर्द्ध चन्द्राकार करता हूँ।

इसके बाद पुरुष को भगवान् के दाहिनी ओर एव स्त्री हो तो बांई ओर खड़ा होकर दोनों हाथ जोड़ कर दोनों

गोड़ों एव मस्तक को नवाकर इस प्रकार उठ बैठ के साथ तीन बार बोले—

इच्छामि समासमणो, वदिऊ जावणिजाए निसीहि आए मत्थेण वदामि।

फिर बैठकर —

इरियावहियाए—

इच्छाकारेण सदिसह भगवन्! इरियावहिय पडिक्कमामि? इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउ, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणग दग मटी मक्कडासताणा सकमणेजे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाण संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कड।

तस्स उत्तरी

तस्सउत्तरीकरणेण, पायच्छितकरणेण, विसोहीकरणेण, विसल्लीकरणेण, पावाण कम्माण निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्ग।

अन्नत्थ उससिएण

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगमचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अवि राहिओ, हुज्जमे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नम्मुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

फिर एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग करे—
काउस्सग पार करके लोगस्स प्रगट कहे —

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरेजिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जं संवासुपुज्जं च। विमलं मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरंच मल्लिं, वंदे मुणिं सुव्वयं नमिं जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउ वसंपि जिणवरा, तित्थयरामे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय

चंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहिलाभ, समाहिवर मुत्तम दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मल-यरा, आइच्चेसु अहिय पयासयरा। सागरवर गभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसतु ॥७॥

फिर नीचे बैठकर जीमण गोड़ा नीचा, डावा गोड़ा ऊँचा करके अञ्जलि बांधकर इस प्रकार चैत्य वंदन करना चाहिये—या कोई स्तवन वगैरह बोल—

अनंत गुणी श्री शान्तिना नर नारी गुण गावे,
द्रव्य भाव शुचि प्रेमसु अजर अमर पद पावे।
सुख सम्पत्ति कारक तुम प्रभू पूर्ण प्रीति जिसराम,
क्षेम कुशल नित्य चाहिये करू वंदन शिरनाम।

जं किंचि नाम तित्थ, सग्गे पायाले माणुसे लोए। जाइ जिण बिंबाइ, ताइ सव्वाइ वदामि।

णमोत्थुण अरिहंताण भगवंताण ॥१॥ आइगराण तित्थयराण सय-संबुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिस सीहाण, पुरिसवर पुंडरिआण, पुरिसवर-गंध हत्थीण ॥३॥ लोगुत्तमाण लोगनाहाण, लोगहियाण, लोगपईवाण, लोग पज्जो अगराण ॥४॥ अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्ग-दयाण, सरणदयाण बोहिदयाण ॥५॥ धम्मदयाण, धम्म देसियाण धम्मनायगाण धम्मसारहीण धम्मवर चाउरत

चक्कवट्टीण ॥६॥ अप्पडिहय वरनाण दसण धराणं विअट्ट छउमाण ॥७॥ जिणाण जावयाण तिन्नाण तारयाण बुद्धाणं बोहयाण मुत्ताण मोअगाण ॥८॥ सव्वन्नूण सव्व दरिसीण सिवमयल मरुअमणत मक्खयमव्वाह-याह मपुण रावित्ति सिद्धिगइनामधेय ठाण सपत्ताणं नमो जिणाण जिअभयाण ॥९॥ जेअ अईया सिद्धा, जेअ भविस्सतिऽणागए काले। सपइ अ वट्टमाणा, सव्वेतिविहेण वदामि ॥१०॥

जावति चेइयाइ उड्ढे अ अहे अ तिरियलोए य। सव्वाइ ताइ वदे [redacted] सतो तत्थ सताइ ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वदिउ जावणिज्जाए निसीहि आए मत्थएण वदामि।

भगवन् जावत केविसाहू भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ तिविहेण तिदडविरयाण ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्य ॥२।

कोई स्तवन बोलें-बादमें

उवसग्गहर स्तोत्र

उवसग्ग [redacted] पास, पास वदामि कम्मघणमुक्क।
विसहर विसनिन्नास, मगल कल्लाण आवास ॥१॥

निसहर फुलिंगमंतं, कंठे धार [illegible]
तस्सगह-रोग मारी, दुट्ठजरा [illegible] ॥२॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि [illegible]
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख [illegible] ॥३॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि [illegible]
पावंति अविग्घेण, जीवा [illegible]
इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भर [illegible]
ता दव दिज्ज बोहिं, भवे भवे [illegible] ॥५॥

अब दोनों हाथ जोड़ मस्तक [illegible]

जयवीयराय जगगुरु, होउ मम [illegible]
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिया [illegible]
लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजण पूआ [illegible]
सुहगुरुजोगो तव्वयण सेवा [illegible]

पुन खडा होकर दोनों हाथ [illegible]

अरिहंत चेइआणं करेमि [illegible]
पूअण वत्तिआए सक्कार वत्ति [illegible]
बोहिलाभ वत्तिआए निरुव [illegible] ॥१॥ सद्धाए
मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए [illegible]
काउस्सग्ग ॥२॥

अन्नत्थ ऊससिएण नीससिएण खासिएण छीएण जंभाइएण उड्डुएण वायनिसग्गेण भमलिए पित्तमुच्छए ।१। सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

इसके पीछे हाथ लम्बा करके, नेत्रों को बन्द करके, होठ आदि हिलाये बिना मौन में एक नवकारका काउस्सग करें। काउस्सग पार करके एकथुई बोलें —

> अष्टापदे श्री आदिजिनवर वीरजिन पावापुरे
> वासुपूज्य चम्पा पुरिअ सिद्धा नेमिरैवत गिरवरे
> सम्मेतशिखरे बीस जिनवर मुक्ति पहुंचा मुनिवरू
> चौबीस जिनवर तेह वन्दू सकल संघ सुखकरू

आवस्सहि, आवस्सहि, आवस्सहि तीन बार कहकर मंदिर से बाहर आवें।

पूजन विधि

जैन शास्त्रों में पूजा की विधि बहुत ही विस्तारपूर्वक विधिविधान सहित लिखी हुई है एवं पूजा का फल भी बहुत कहा है। लेकिन प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह समय नहीं है कि वह शास्त्र पढ़कर ही सब विधि जानें। अतएव संक्षेप में— यहाँ जिन पूजन विधि लिखते हैं ताकि हरएक साधारण व्यक्ति भी उसे समझ सके।

पूजन करनेवाले को स्नान आदि करके अपने शरीर की शुद्धि करनी चाहिये। आजकल कई व्यक्ति घर से ही स्नान करके आते हैं एवं मन्दिर में आकर हाथ पांव धोकर कपड़े बदलकर पूजा में चले जाते हैं—लेकिन घरसे मन्दिर तक पहुँचने में—कपड़े पहिनके आना एवं रास्तों में कितनों का स्पर्श होता है कोई ठीक थोड़े ही है। एवं दूसरी बात यह है कि सब लोग तो यह नहीं जानते कि ये घर से स्नान करके आये हैं अतः उनके अनुकरण में दूसरे भी सिर्फ हाथ पाँव धोकर पूजा में प्रवेश करना चाहते हैं।

स्नान शुद्धि के बाद पूजन के वस्त्र याने धोती पहनकर, चद्दर का उतरासन करके—मुँह एवं नाक ठीक से बाँधकर चन्दन केशर, घोटकर तैयार कर लें—सुगन्ध के लिये केशर में थोड़ा बरास डालें—गरमी हो तो गुलाब जल भी डालें। चन्दन केशर का अपने ललाट पर तिलक या टीकी लगाकर

मूल गभारे के पास आवें। प्रभू मुद्रा को देखते ही वन्दना करके अपनी केशर च दन पुष्प आदि को धूप खेकर--मूल-गभारे में प्रवेश करें। प्रतिमाजी को पहिले धूप देना चाहिये। तत्पश्चात् उनके छत्र चमर भामंडल, या आभूषणों आदि को उतार कर यथा स्थान रखें। फिर जीव दया के ख्याल से कोई चींटी, मकोड़ा आदि न हो, देखकर प्रतिमाजी के मोर पींछी व्यवहार करें। फिर पानी व दूध छानकर, धूप देकर पहिले कलशों से स्नान करावें। खस कूँचो से जहाँ-तहाँ केशर लगी हो उतारकर दूध से एव पुन पानी से तथा गरमी हो तो पानी में गुलाब जल केवड़ा आदि डाल कर स्नान करावें। पास में जो भाई बहिन खड़े हों उनको भी सेवा में लाभ लेनेका निवेदन करें। बादमें एक एक करके तीन अगलू-छणों से प्रतिमाजी को ठीक से पोंछे। कहीं भी जरा भी जल बिन्दु भी न रहना चाहिये।

तीसरा अगलूछणा करके--पुन धूप देकर प्रभूकी चन्दन केशर से इस प्रकार पूजा करें---

पूजा सर्व अगों में पहिले दाहिने तरफ, फिर बाइ तरफ करें—नव अगोंकी पूजा होती है--उनका एक एक श्लोक पढ़ें और अग भेंटें--

जल भरी सपुट पात्रमा, युगलिक नर पूजत।
ऋषभ चरण अगूठड़े, दायक भव जल अत ॥१॥

दोनों पांवके अगूठों का पूजन।

सिद्ध शिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ।
वसिया तिण कारण सही, सिद्ध शिला पूजंत ॥९॥
शिला का पूजन ।

उपदेशक नव तत्वना, तिम नव अंग जिणंद ।
पूजो बहुविध भावथी, कहे सहु वीर मुणिंद ॥१०॥

इस प्रकार पूजन होता है। यह ध्यान में रखना चाहिये कि पहिले मूलनायकजी की पूजा, बाद अन्य तीर्थंकरों का पूजन, पीछे श्री गणधरों का एवं उसके बाद आचार्यों का पूजन करके फिर शासनदेवी भैरुजी आदि का पूजन करना चाहिये।

फिर तीन प्रदिक्षण देकर, चावलों का साथिया करके फल, फूल, मेवा मिठाई, चढ़ाकर चैत्य वंदना करना चाहिये। फिर आरती करनी चाहिये।

प्रभात की आरती

जय जय आरती शांति तुमारी,
तोरा चरण कमल की मैं जाऊँ बलिहारी ॥टेर॥
विश्वसेन अचिराजी के नन्दा,
शांतीनाथ मुख पूनम चन्दा ॥जय जय आ०॥
चालिस धनुष सोवन मय काया,
मृग लांछन प्रभू चरण सुहाया ॥जय जय आ०॥

चक्रवर्ति प्रभु पदम सोहै,
सोल्म जिनवर जग प्रभु मोहै ॥जय जय आ०॥
मगल आरती मोरे कीन,
जनम जनम को छाटो दीने ॥जय जय आ०॥
करजोड़ी सेवक गुण गावै,
सो नर नारी अमर पद पावै ॥जय जय आ०॥
॥इति॥

पूजा करनेवालों को यह बराबर ध्यान दे [illegible] कि उनके शरीर में यदि जरा भी अशुचि हो, [illegible], फोडा, फुंसी से मवाद, पेप आदि निकलता हो [illegible] रजस्वला होने से तीन दिन तक पूजन नहीं [illegible] जिन्होंने शव को उठाया हो—वे उस दिन [illegible] शवयात्रा में गये हो व एक दिन तक पूजन न करें। [illegible] घर में लड़के लड़की का जन्म हुआ हो [illegible] पूजन न करें।

पूजन में काम आनेवाले पुष्पों का [illegible], [illegible], काम में लेनेसे अनेक जीवों का [illegible] है—इसी [illegible] कभी कुंथु-कुंथु वेइन्द्रिय जीव पुष्पों में [illegible] रहते हैं। फूलों के काटने, पिरोने से सहज ही उनका [illegible] सम्भव है—इसका अयत विवेक [illegible] है।

मुखकोस बाँधने का नियम है कि मुख और नाक

को बाँधकर पूजन में प्रवेश करना चाहिये । कुछ कुछ भाई बहिन सिर्फ मुँह बाँधते हैं एवं नाक खुला रखते हैं---कुछ सिर्फ मुंह के आगे नाम मात्र की चदर लगा लेते हैं कुछ पूजन के बाद मुखकोस खोल देते हैं एवं थोक देते हुवे--प्रभू मुद्रा तक विना मुखकोस बाँधे चले जाते हैं कुछ खुले मुँह प्रभू प्रतिमाजी के अति नजदीक खड़े होकर स्तवन गाते हैं । उससे अशातना होती है । मुंह तथा नाक की गर्मी हवा प्रतिमा पर पड़ती है ।

पूजन का समय सूर्योदय के बाद का ही कहा गया है इसका हमेशा ध्यान रखना चाहिये ।

सामायिक सूत्र

करमि भन्ते, मामाइय सावज्ज जोग पच्चक्खामि, जाव नियम पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेण, मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ।

सामायिक पारनेकी गाथा

भयव दसण्ण भद्दो, सुदसणो थूलि भद्द वइरोय सफली कय गिहचाया, साहू एव विहाईति ॥१॥ साहूण वन्दणेण, नासई पाव असकिया भावा । फासुअ दाणे निज्जर, अभिग्गहो नाण माइण ॥२॥ छउमत्थो मूढ मणो । ... ... चिंपि समरइ जीवो । ज च न सर्म

रामि अह मिच्छामि, दुक्कडं तस्स ॥३॥ जं जं मणेण चिंतिय—ममुह वायाइ भासिय किंचि। अमुह काएण कय, मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥४॥ सामाइय पोसह सठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो। सो सफलो बोधव्वो से सो ससार फल हेऊ ॥५॥ सामायिक लिया लीधु लिये कीधुं विधि करता जो कोई अविधि आशातना-लागी होय, दश मन के, दश वचन के, बारह काया के एव प्रकारे ३२ दूषण में जो कोई दूषण लगा होय सो सब मन वचन काया करके मिच्छामि दुक्कड।

तपागच्छ में ये गाथाएँ बोली जाती हैं

सामाईय वय जुत्तो जाव मणो होई नियम सजुत्तो। छिन्नई असुह कम्म सामाइय जत्तिया वारा ॥१॥ समाईयम्मि उकए समणो इव सावओ हवइ जम्हा। एएण कारणेण, बहुसो सामाइय कुज्जा ॥२॥ सामायिक के ३२ दूषण।

१| पचिंदिय संवरणो तह नवविह बभचेर गुत्ति धरो, चउविह कसाय मुक्को इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो पच महव्वय जुत्तो पच विहायार पालण समत्थो। पच समिओ ति गुत्तो छत्तीस गुरु मज्झ ॥२॥

इति

श्री अष्टप्रकारी पूजा

जल पूजा

विमल केवल भासन भास्कर, जगति जंतु महोदय कारण।
जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये॥

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्री मज्जिनेन्द्राय जल यजामहे स्वाहा।
॥ इति जल पूजा ॥

जल पूजा से संसार में मनुष्यों का अभ्युदय होता है तथा उनके मार्ग संसार के परिभोग और शरीर आदि में अनित्य भावना का विकास होता है।

चन्दन पूजा

सकल मोह तिमिस्र विनाशनं, परमशीतल भाव युतं जिनं।
विनयकुंकुम चंदन दर्शनै, सहज तत्त्व विकाश कृतेऽर्चये॥

ॐ ह्रीं परमात्मने अानन्दानन्द ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय चंदन यजामहे स्वाहा।
यह कह कर चंदन चढ़ावें।

चन्दन पूजा से अन्तःकरण में स्थित अज्ञान तथा मोह रूप अंधकार का नाश होता है, हृदय में शांति और समता उत्पन्न होती है तथा देव गुरु धर्म के प्रति विनय का विकास होता है।

पुष्प पूजा

विकचनिर्मल शुद्ध मनोरमै विशद चेतन भाव समुद्‌भवै ।
सुपरिणाम प्रसून घनैर्नवैं, परमतत्त्वमय हि यजाम्यहं ॥

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय पुष्प यजामहे स्वाहा ।
इति पुष्प पूजा ।

पुष्प पूजा से अन्त करण में सद्‌भावना जागृत होती है, चित्त की स्थिरता होकर शुभ परिणामों का उदय होता है एव यथार्थ तत्व का बोध होता है ।

धूप पूजा

सकल कर्म्म महेंधन दाहन, विमल संवर भाव सुधूपन ।
अशुभ पुद्‌गल संग विवर्जित, जिनपते पुरतोऽस्तु सुहर्षित

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय धूप यजामहे स्वाहा ।
इति धूप पूजा ।

धूप पूजा से आठ प्रकार के कर्म रूप ईंधन का दाहक निर्मल संवर भाव उत्पन्न होता है जिससे कर्म बंधन छूटता है, तथा अन्त करण शुद्ध होता है ।

दीप पूजा

भविक निर्म्मल बोध विकाशक, जिनगृहे शुभ दीपक दीपन
सुगुण राग विशुद्धि समन्वित, दधतु भाव विकाश कृतेंजना॰

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानत ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय दीप यजामहे स्वाहा। इति दीप पूजा।

जैसे दीपक से मन्दिर में प्रकाश होता है वैसे ही हमारी आत्मा में दीप पूजा से निर्मल बोध का विकाश हो, तथा सद्गुणों पार्जन में रुचि उत्पन्न हो।

अक्षत पूजा

सकल मङ्गल केलि निकेतन, परम मङ्गल भाव मय जिन।
श्रयति भव्य जना इति दर्शयन्, दधतु नाथ पुरोक्षत स्वस्तिक

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानत ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय अक्षत यजामहे स्वाहा। इति अक्षत पूजा।

जैसे अक्षत मंगलकारी है—वैसे ही मैं भी सर्व सद्भाव प्राप्तकर मंगलकारी बनूँ।

नैवेद्य पूजा

सकल पुद्गल सङ्ग विवर्जित, सहज चेतन भाव विलासकः।
सरस भोजन नव्य निवेदनात्, परम निर्वृति भावमहं स्पृहे ॥

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय नैवेद्य यजामहे स्वाहा। इति नैवेद्य पूजा।

नैवेद्य मिठाई पकान्न आदि चढ़ावें।

नैवेद्य पूजा से अन्तःकरण कर्मरज से रहित होकर स्वच्छ दर्पण के समान बने। उसमें सहज निर्मल चेतन आत्मा का साक्षात दर्शन हो, तथा मोक्ष के यथार्थ स्वरूप का बोध हो।

फल पूजा

कटुककर्म विपाक विनाशन, सरस पक्व फल व्रज ढौकनं।
विहितमोक्ष फलस्य प्रभोः पुरः,कुरुत सिद्धि फलाय महाजना

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय फल यजामहे स्वाहा। इति फल पूजा।

(श्रीफल, सुपारी, नारियल प्रमुख चढ़ावें)

फल पूजा से कटु विपाक वाले कर्मों का क्षय होता है एवं मोक्ष फल की प्राप्ति होती है।

अर्घ्य पूजा

इति जिनवर वृन्द भक्तितः पूजयन्ति,
सकल गुण निधान देवचन्द्र स्तुवन्ति।
प्रतिदिवस मनन्त तत्र मुद्धासयन्ति,
परम सहज रूप मोक्ष सौख्य श्रयन्ति।

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय अर्घ्यं यजामहे स्वाहा।
चारों कोनों में पानी की धार दें। इति अर्घ्य पूजा।

वस्त्र पूजा

(वस्त्र लेकर खड़ा रहे और यह श्लोक पढ़ें)

शक्रोयथा जिनपते सुरशैल चूला,
सिंहासनो परिमित स्नपना वसाने।
दध्यक्षतैः कुसुम चन्दन गन्ध धूप,
कृत्वार्च्चन सु विदधाति सुवस्त्र पूजा ॥१॥

तद्वत् श्रावक वर्ग एव विधिवत्तालंकार वस्त्रादिकं,
पूजा तीर्थ कृता करोति सतत शक्त्यादि भक्त्या इव।
नीरागस्य निरञ्जनस्य विजितारातेः स्त्रीलोकीपतेः,
स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृ ति कृते क्लेश क्षयाकाङ्क्षया ॥२॥

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय वस्त्रेण यजामहे स्वाहा।
वस्त्र चढावें।

॥ इति अष्ट प्रकारी पूजा ॥

स्नात्र पूजा

॥ पारसडी गाथा ॥

चौतीसें अतिशय जुओ, वचनातिशय संजुत ।
सो परमेस्वर देखि मजि, सिंघासण मयत्त ॥

ढाल

सिंहासन बैठा जगमाण, देखि भवियण गुण मणि खाण ।
जे दीठें तुम निम्मर झाण, लहिये परम महोदय ठाण ॥१॥

कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा ॥

तोरा चरण कमल चौबीस पूजों रे, चौबीस सोभागी,
चौबीस वैरागी, चौबीस जिणन्दा ।

(कुसुमांजलि हाथ में लेकर के यानी
यह पढ़ते हुए चरणों में टीकी लगानी चाहिये ।)

गाथा

जो निज गुण पज्जव रम्यो, तसु अनुभव एगत्त ।
सुह पुग्गल आरोपतां, ज्योति सुरंग निरत्त ॥

गाथा

जो निज आतम गुण आणंदी, पुग्गल संगे जेह अफन्दी ।
जे परमेश्वर निज पद लीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥१॥

कुसुमांजलि मेलो शांति जिणंदा ॥

तोरा चरण कमल चौबीस पूजोरे, चौबीस सौभागी, चौबीस वैरागी, चौबीस जिणंदा ।

कुसुमांजलि मेलो शांति जिणंदा–

(यह पढ़कर घुटनों पर टीकी लगानी चाहिये) ॥२॥

गाथा

निम्मल नाण पयास कर, निम्मल गुण संपन्न ।

निम्मल धम्म उवएसकर, सो परमप्पा धन्न ॥३॥

ढाल

लोकालोक प्रकाशक नाणी, भविजन तारण जेहनी वाणी ।

परमानंद तणी नीसाणी, तसु भगते मुझ मति ठहराणी ॥१॥

कुसुमांजलि मेलो नेमि जिणंदा ।

तोरा चरण कमल चौबीस पूजोरे, चौबीस सौभागी, चौवीस वैरागी, चौबीस जिणंदा ।

कुसुमांजलि मेलो श्री नेमि जिणंदा–––

(यह पढ़कर दोनों हाथों पर टीकी लगानी चाहिये) ॥३॥

गाथा

जे सिद्धा सिज्झंति जे, सिज्झिस्संति अणंत ।

जसु ओलंबन ठविय मन, सो सेवो अरिहंत ॥४॥

ढाल

शिव सुख कारण जे त्रिकालें, सम परिणामें जगत निहालें ।

उत्तम साधन मार्ग दिखालें, इन्द्रादिक सु चरण पखालें ॥१॥

कुसुमाञ्जलि मेलो पार्श्व जिणंदा ।
हीरा चरण कमल चौबीस पूजोरे, चौबीस सोभागी,
चौबीस वैरागी, चौबीस जिणंदा ।
कुसुमांजलि मेलो श्री पार्श्व जिणंदा ।
(यह पढ़कर दोनों कन्धों पर टीकी लगानी चाहिये)

गाथा

सम विट्ठो देसमय, साहु साहुणी सार ।
अचारिज उवमाय मुनि, जोनिम्मल आधार ॥५॥

ढाल

चौविह संघे जे मन धारयो, मोक्ष तणो कारण निरधारयो ।
विविह कुसुम वरजात गहेवी, तसु चरणो पणमन्त ठवेरी ॥१॥
कुसुमांजलि मेलो श्री वीर जिणंदा ।
हीरा चरण कमल चौबीस पूजोरे, चौबीस सौभागी,
चौबीस वैरागी, चौबीस जिणंदा ।
कुसुमांजलि मेलो श्री वीर जिणंदा--
(यह पढ़कर मस्तक पर टीकी लगानी चाहिये) ॥५॥
॥ इति पांचही गाथा ॥

वस्तु

सयल जिनवर सयल जिनवर नमिय मनरंग । कल्याणक विह संथविय । करिय सुजम्म सुपवित्त सुन्दर । सय इक्क सचरि तित्थकर । समै विहरत महियल । चवण समै इक्क

वीस जिण । जन्म समैं इकवीस । भत्तिय भावै पूजिया । करो सघ सुजगीस ॥१॥

(इकदिन अचिरा हुलरावती-ए देशी ।)

भरतीजे समकित गुण रम्या, जिन भक्ति प्रमुख गुण परिणम्या ।
तजि इन्द्रिय सुख आससना, करि थानक वीसनी सेवना ।
अतिराग प्रशस्त प्रभावता, मन भावना एहनी भावता ।
सवि जीव करू शासन रसी, इसी भाव दया मन उल्लसी ।
लहि परिणाम एहवु भलुं, निपजावी जिन पद निरमलु ।
आऊवंध विचै इक भव करि, श्रद्धा संवेगथी थिर धरी ।
तिहांथी चविय लहे नर भव उदार, भरतें जिम ऐर्कंतेज सार ।
महा विदेह विजय प्रधान, मध्य खडे अवतरे जिन निधान ।

ढाल

पुण्यें सुपना ए देखें, मन में हर्ष विशेषे ।
गजवर उज्जल सुन्दर, निर्मल वृषभ मनोहर ।
निर्भय केसरी सिंह, लक्ष्मी अतिह अनीह ।
अनुपम फूलनी माला, निर्मल शशि सुकमाला ।
तेज तरण अति दीपे, इन्द्र ध्वजा जग जीपे ।
पूरण कुम्भ पडूर, पद्म सरोवर पूर ।
इग्यारमे रयणायर, देखें माताजी गुण सायर ।
बारमें भुवन विमान, तेरमें रत्न निधान ।
अग्नि शिखा निर्धूम, देखे माताजी अनुपम ।
हरखी रायने भासे, राजा अर्थ प्रकाशें ।

जगतपति जिनवर सुखकर, होस्यें पुत्र मनोहर ।
इन्द्रादिक जसु नमस्यें, सकल मनोरथ फलस्यें ।

वस्तु

पुण्य उदय पुण्य उदय उपना जिणनाह, माता तव रयणी समैं देखि सुपन हरषत जागिय । सुपन कहि निज कतने सुपन अरथ सांमलो सोभागिय, त्रिभुवन तिलक महागुणी, होस्यें पुत्र निधान । इन्द्रादिक जसु पय नमी, करस्यें सिद्ध विधान ।

॥ ढाल चन्द्रा उल्लालानी ॥

सोहम पति आसन कंपियो, देई अवधें मन आणंदियो ।
मुझ आतम निरमल करण काज, भव जल तारण प्रगट्यो जिहाज ।
भव अटवि पारग सत्थवाह, केवल नाणाइय गुण अगाह ।
शिव साधन गुण अंकुर जेह, कारण उलट्यो आषाढ मेह ।
हरषे विकसै तब रोम राय, वल्यादिक मां निजतनु न माय ।
सिंहासन थी उठो सुरिंद, प्रणमंतो जिण आणंदकन्द ।
सग अड़पय पमुहा आवितत्थ, करि अञ्जलि प्रणमिय मत्थ सत्थ ।
मुख भाखें ऐ खिण आज सार, तियलोय पहु दीठो उदार ।
रे रे निगुणों सुरलोय देव, विषयानल तापित तनु समेव ।
तसु शांति करण जलधर समान, मिथ्याविष चूरण गरुड़ समान ।
ते देव सकल तारण समत्थ, प्रगट्यो तसु प्रणमी हुई सनत्थ ।
इम जम्पी शक्रस्तव करेनि, तब देव देवि हरखें सुणेनि ।
गावें तब रम्भा गीत गान, सुरलोक हुवो मंगल निधान ।
नर खेत्रें आरज वंश ठाम, जिनराज वधें सुर..

पिता माता घरे उच्छव अलेख, जिन शासन मंगल अति विशेष।
सुरपति देवादिक हर्ष संग, संयम अरथी जनने उमंग।
शुभ वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्यां इन्द्रादिक हर्ष साथ।
सुख पाम्या त्रिभुवन सर्व जीव, वधाई विधाई थई अतीव।

यह कह कर फूल और चावलों से वधाना और बाद में चैत्य वंदन करके और धूप देना चाहिये।

॥ श्री शांति जिननो कलश कहिसु–ए देशी ॥

त्रोटक

श्री तीर्थं पतिनो कलश मज्जन गाइये सुखकार,
नरखेत मंडन दुह निहंडन भविक मन आधार।
तिहां राव राणा हर्ष उच्छव थयो जग जयकार,
दिसी कुमरि अवधि विशेष जाणी लह्यो हर्ष अपार।
निय अमर अमरी संग कुमरी गावती गुण छंद,
जिन जननी पासें आवि पोंहती गहगृहती आणंद।
हे माय तें जिनराज जायो शचि वधायो रम्म,
अम जम्म निम्मल करण कारण करिस सुइय कम्म।
तिहा भूमिशोधन दीप दर्पण वाय विंजण धार,
तिहा करिय कदली गेह जिनवर जननी मज्जनकार।
वर राखडी जिन पाणी बांधी दिये इम आसीस,
जुग कोडा कोडी चिरजीवो धर्म दायक ईश।

ढाल इक्कसनी

जगनायकजी, त्रिभुवन जनहित कारए।
परमातमनी, चिदानद घनसारए।
जिन रयणीजी, दश दिस उज्जलता धरे।
शुभ लगनेपी, ज्योतिप चक्रते सचरे।
जिन जनम्याजी, जिन अवसर माता घरे। ६
तिण अवसरनी, इन्द्रासन पिण थर हरे।

त्रोटक

थरहरे आसन इन्द्र चिंते कवण अवसर ए बण्यो।
जिन जन्म उच्छव काल जाणी अतिहि आनन्द ऊपन्यो॥
निन सिद्ध सम्पति हेतु जिनवर जाणि भगते ऊमह्यो।
विकसत वदन प्रमोद बधते देव नायक गह गह्यो॥

ढाल

तब सुरपतिजी, घटानाद करावए।
सुरलोकेंजी, घोषणा एहू दिरावए॥
मर क्षेत्रेंजी, जिनवर जन्म हुवो अछे।
तसु भगतेंजी, सुरपति मंदिर गिर गछे॥

त्रोटक

गछे मदर शिखर ऊपर भवन जीवन जिन तणों।
जिन जन्म उच्छव करण कारण आवज्यो सवि सुर गणों॥
तुम शुद्ध समकित थास्यें निर्मल देवाधिदेव निहालतां।
आपणा पातिक सर्व जास्यें नाथ चरण*

ढाल

इम सांभलिजी, सुरवरकोड़ी बहु मिली ।
जिन वदनजी, मंदर गिर साहमी चली ।
सोहमपतिजी, जिन जननी घर आविया ।
जिनमाताजी, वदी स्वामी वधाविया ।

त्रोटक

वधाविया जिनवर हर्ष बहुले धन्य तूँ इन पुण्य ए ।
त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुफ सम्पूरण अन्य ए ॥
हे जगत जननी पुत्र तुम चो मेर मज्जन घर करी ।
उच्छंग तुम चे वलिय थापिस आतमां पुण्ये भरी ॥

ढाल

सुरनायकनी, जिन निजकर कमलें ठव्या ।
पांचरूपेजी, अतिशय महिमायें स्तव्या ॥
नाटकविधजी, तब बत्तीस आगल वहे ।
सुरकोड़ीनी, जिन दरशणनें उमट्टे ॥

त्रोटक

सुरकोड़ कोड़ी नाचती वलि नाथ शुचि गुण गावती ।
अपछरा कोड़ी हाथ जोड़ी हाव भाव दिखावती ॥
जय जयो तूँ जिनराज जग गुरु एम दे आसीस ए ।
अमताण शरण आधार जीवन एक तूँ जगदीस ए ॥

ढाल

सुर गिरवरजी, पाडुक वन में चिहुँ दिसें ।
गिरि शिखरजी, सिंहासन सासय वसे ॥
तिहांआणीजी, शक्रे जिन खोले महा ।
चउसठेंजी, तिहां सुरपति आवी रहा ॥

त्रोटक

अविया सुरपति सर्व भगतें कलश श्रेणि बणावए ।
सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषधि सर्व वस्तु अणावए ॥
अच्चुयपति तिहां हुकम कीनो देव कोडा कोडी ने ।
जिन मज्जनारथे नीर लाओ सवे सुरकर जोड़िने ॥

(जल का कलश लेकर खड़े रहें और पढ़ें)

॥ शांति ने कारणें इन्द्र कलश भरे-ए देशी ॥

ढाल

आत्म साधन रसी देव कोडी हसी ।
लक्ष्मी नें धसी खीर सागर दिशी ॥
पउमदह आदि दह गंग पमुहा नई ।
तीर्थ जल अमल लेवा भणी ते गई ॥
जाति अड़ कलश करि सहस अठोत्तरा ।
छत्र चामर सिंहासणे शुभ तरा ॥
d/ उपगरण पुष्फ चगेरि पमुहा सर्वे ।
आगमें भासिया तेम आणि ठवें ॥

तीर्थं जल भरिय करि कलश करि देवता ।
गावता भावता धर्म उन्नति रता ॥
तिरिय नर अमरनें हर्ष उपजावता ।
धय श्रम शक्ति शुचि भक्ति इम भावता ।
समकितें बीज निज आत्म आरोपतां ।
कलश पाणी मिसें भक्ति जल सींचता ॥
मेरु सिंह_रोवरे सर्व आव्या वही ।
शक्र उच्छङ्ग जिन देखि मन गहगही ॥

गाथा

हहो देवा अणाई कालो, अदिट्ठ पुव्वो तिलोय कारण ।
तिलोय बंधु मिच्छत्त मोह विद्धसणो ।
आणाइति हण थिणा सणो, देवाहि देवो दिट्ठन्वो हिय कामेहि ॥

ढाल

एम पभणत वण भुवन जोईसरा,
देव वेमाणिया प्रति धम्मायरा ।
केवि कप्प ट्ठिया केवि मित्ताणुगा ।
केवि वर रमण वयणेण अह उच्छगा ।

वस्तु

तत्थ अच्युय तत्थ अच्युय इन्द्र आदेश ।
कर जोड़ि सब देव गण लेई कलश आदेश भामिय ।
अद्भुत रूप सरूप जुयक्खण एह पुच्छन्त सामिय ?

इन्द्र कहे जग तारण तारण अम्ह परमेस ।
दायक नायक धर्म निधि करिये तसु अभिषेक ॥
(इस समय जल की थोड़ी सी धारा देना)

॥ सीर्थं कमल्वर उदक भरीने पुष्कर सागर आवे–ए देशी ॥

ढाल

पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे नामी ।
आतम निर्मल भाव करता, बधतें शुभ परिणामें ॥
अच्युतादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकान्त ।
सामानिक इन्द्राणी प्रमुहा, इम अभिषेक करंत ॥ पूर्ण कलश

गाथा

तब ईशाण सुरिंदो, सक्क पभणेइ करि सुपसाउ ।
तुम अंके महनाओ, निणमिस अम्ह अप्पह ॥
ता सक्किन्दो पभणइ, साहम्मि चच्छ रम्मि बहुलाओ ।
आणा पव तण, गिहद होउ कय था भो ॥
(यह कह कर सभी कड़शी के अग्गे भगवान को स्नान कराना चाहिये) ।

ढाल

सोहम सुरपति वृषभ रूप करि न्हवण करें प्रभु अंगे ।
करिय विलेपन पुष्पमाल ठवि वर आभरण अभंगे ॥सोहम० १॥
तब सुरवर बहु जय जय रव करि निरचे धरि आणंद । नचै
मोक्ष मारग सारथपति पाम्यो भांजस्युं हि भव बंध ॥सो० २॥

कोड़ बत्तीस सोवन उवारो वाजते वरनाद ।
सुरपति सब अमर श्री प्रभु ने जननीनें सुप्रसाद ॥
आणी थापी एम पयपे अम्ह नित्तरिया आज ।
पुत्र तुमारो धणिय हमारो तारण तरण जिहाज ॥सोहम०३॥
मात जतन करि राखज्यो एहनें तुम सुत हम आधार ।
सुरपति भक्ति सहित नंदीश्वर करे जिन भक्ति उदार ॥सो०४॥
निय निय कप्प गया सहु निज्जर कहता प्रभु गुण सार ।
दीक्षा केवल नान कल्याणक इच्छा चित्त मझार ॥सोहम०५॥
खरतरगच्छ जिण आणा रंगी राज सागर उवज्झाय ।
ज्ञान धर्म दीपचंद सुपाठक सुगुरु तणें सुपसाय ॥
देवचन्द निनु भवतें गायो जन्म महोत्सव छंद । नं
बोध बीज अंकुरो उल्स्यो संघ सकल आणंद ॥सोहम०६॥

राग वेलावल

इम पूजा भगतें करो, आतमहित काज ।
तजिय विभव निज भावना, रमतां शिवराज ॥ इम पूजा ॥१॥
काल अनंतें जे हुवा, होस्यें जेह
जिणंद सपद सीमंधर प्रभु, केवल नाण दिणंद ॥इम पूजा ॥२॥
जन्म महोच्छव इण परें, श्रावक रूचिवंत ।
विरचे जिन प्रतिमा तणों, अनुमोदन खंत ॥ इम पूजा ॥३॥
देवचन्द जिन पजना, करतां भव पार ।
जिन महिमा जिन सारखी, कही सूत्र मझार ॥ इम पूजा ॥

॥ इति स्नात्र पूजा ॥

साध्वीजी श्री आदिश्रीजी की स्मृति में

श्री जिन दर्शन-पूजा विधि

तथा

श्री स्नात्र पूजा

मिलने का पता—
श्री जैन श्वेताम्बर पचायती मन्दिर
१९६, तुलापट्टी, कलकत्ता ७

प्रथमावृत्ति
१२००

मूल्य
सदुपयोग

सुराना प्रिंटिङ्ग वर्क्स, कलकत्ता ७